Department :- Ayurved Samhita & Siddhant

Topic :- **परमाणुवाद एवं विवर्तवाद**

परमाणुवाद

परमाणु-जब किसी द्रव्य के छोटे से छोटे अवयव को विभाजित करते जाते हैं, जहाँ पर उस सूक्ष्मतम कण का आगे विभाजन नहीं किया जा सके तथा उस द्रव्य का अणु निरवयव हो, अर्थात् अब उसमे अन्य घटक न हो,उसे परमाणु कहते हैं|

- परमाणुवाद को न्याय व वैशेषिक दर्शन दोनों ने माना हैं|

"परमाणुत्वं परिमाणवान् परमाणु:|" (वै.द.3/1)
अर्थात् जिसमे परमाणुत्व हैं तथा जो परिमाणवान् हैं, वह परमाणु हैं|

“न प्रलयोऽणु सद्भावात्|” (न्याय द.4/2/46)
अर्थात् सद्भाव से जिसका प्रलय न हो, उसे परमाणु कहते हैं|

“जालान्तरगते भानौ यत् सूक्ष्मं दृश्यते रज:|
तस्य त्रिन्शत्तमो भाग: परमाणुरुच्यते बुधै:||” (शा.सं.)

अर्थात् सूर्य की किरणों के अंतर्गत जो सूक्ष्मतम रज:कण चारों ओर भ्रमण करते हुए दिखाई देते हैं, उसके तीसवें भाग वाले परिमाणयुक्त अणु को परमाणु कहते हैं|

परमाणु के निम्न लक्षण बताए गए हैं-

1. परमाणुत्व
2. निरवयवत्व
3. परिमाणत्व

परमाणु का परिमाणत्व-

- परिमाणत्व का तात्पर्य यह हैं की परमाणु सूक्ष्म या निरवयव हो, परंतु इसमे परिमाण अवश्य विद्यमान रहता हैं|

- आचार्य शांर्गधर ने जालान्तरगत सूर्य की किरणों में दृश्यमान रज:कण जो दिखाई देता हैं, उसके तीसवें भाग को परमाणु का परिमाण कहा जाता हैं|

- रज:कण की परमाणु संख्या तीस होती हैं| अन्यत्र रज:कणों की परमाणु संख्या छ:कही गयी हैं|

- परमाणुवाद के आधार पर द्रव्य रचना का ज्ञान होता हैं|

  “त्र्यणुकं अवयवजन्यं चाक्षुषद्रव्यत्वात् घटवत्|”

  अर्थात् चक्षु द्वारा दृश्यमान रज:कण हैं, उसको “त्र्यणुक” कहा गया हैं|

दो निरवयव सूक्ष्म परमाणु जब आपस में मिलते हैं तो उसे “द्वयणुक” कहा जाता हैं| तीन द्वयणुक मिलने से एक “त्र्यणुक” बनता हैं| पुन: चार त्र्यणुक मिलते हैं, तो “चतुर्णुक” बनता हैं| इसके बाद स्थूल पदार्थों की उत्पति- पृथिवी आदि की होती हैं|

त्र्यणुक में परमाणु की संख्या 3 द्वयणुक x 2 परमाणु = 6 परमाणु

शांर्गधर के अनुसार रज:कण में 30 परमाणु हैं| इस कण में मूर्तत्व हैं तो पृथिवी की विद्यमानता हैं, अत: वह दृश्यमान कण पाँचभौतिक हैं|

अत: 5 त्र्यणुक x 3 द्वयणुक x 2 परमाणु = 30 परमाणु

- परमाणुओं का प्रथम अवयवयुक्त रूप द्वयणुक होता हैं|

" द्वयणुकं अवयवजन्यं महदारम्भकत्वात् कपालवत् "
अर्थात् बृहद परिमाण वाले द्रव्यों का प्रारम्भिक रूप द्वयणुक ही होता हैं|

यह परमाणु पृथिवी आदि कार्य द्रव्यों का समवायिकारण होने पर भी निरवयव हैं| ये परमाणु संख्या में अनेक होते हैं|

चरक संहिता में परमाणुवाद

- आयुर्वेद में शरीररचना में परमाणुओं को स्वीकार किया गया हैं|

"शरीरावयवास्तु परमाणुभेदेनापरिसंख्येया भवन्ति, अतिबहुत्वादातिसौक्ष्म्यादतीन्द्रियत्वाच्च| तेषां संयोगविभागे परमाणुनां कारणं वायु: कर्मस्वभावाच्च|" (च.शा.7/17)

अर्थात् शरीर के अवयव परमाणु भेद से असंख्येय होते हैं| परमाणुओं की संख्या अत्यधिक हैं| ये अति सूक्ष्म होते हैंनकी अतीन्द्रिय होते हैं| इन परमाणुओं के संयोग वियोग का कारण वायु व कर्मस्वभाव होता हैं|

विवर्तवाद

- विवर्त का अर्थ भ्रम या भ्रान्ति

- जिस वस्तु से जिस तत्व का परिज्ञान होना चाहिए, वह न होकर मिथ्या ज्ञान होना ही विवर्तवाद हैं|
  जैसे-रस्सी को सांप समझना| यहां रस्सी सांप नहीं बन जाती लेकिन प्रतीत होती हैं|

- विवर्तवाद अद्वैतवादी वेदान्तियो का सिद्धांत हैं| अद्वैतवाद के प्रवर्तक शंकराचार्य माने जाते हैं| जिनका कथन हैं कि-

1. सृष्टि में शुद्ध चैतन्य सत्ता हैं,जो निर्गुण, नि:विशेष, शुद्ध ज्ञानस्वरूप हैं, जिसे परमात्मा कहते हैं|
2. परमात्मा के साथ एक शक्ति हैं, जिसे माया कहा जाता हैं, जिसकी सहायता से परमात्मा इस सृष्टि की रचना करता हैं|
3. ब्रह्म ही इस जगत का निमित्तकारण हैं| माया से सम्बंधित होने के कारण इसे ईश्वर कहा जाता हैं तथा अविद्या से सम्बंधित होने से जीव कहा जाता हैं|

- जीव अविद्या के कारण अपने ब्रह्मस्वरूप को भूलकर बुद्धि, अहंकार,मन, इन्द्रियों व शरीर आदि को अपना वास्तविक स्वरूप समझ कर व्यवहार करता हैं|

- आत्मा परमात्मा और जीव व ब्रह्म की एकता के पूर्ण ज्ञान से अविद्या का नाश हो जाने से शरीर, इन्द्रिय, मन तथा बुद्धि आदि उपाधियों से आत्मभाव मिट जाता हैं| जिसके उपरांत कर्ता- भोक्ता के अहंकार निवृत हो जाने से मुक्ति पाकर अनंत ज्ञानस्वरूप ब्रह्म में स्थित हो जाता हैं|

- जगत की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय माया का परिणाम हैं| यह केवल चेतन सत्ता में भ्रम उत्पन्न करता हैं| वह माया ब्रह्म की विशेष शक्ति हैं| ब्रह्म को जगत का विवर्ती उपादान कारण माना गया हैं, अत: इस सिद्धांत को विवर्तवाद कहा जाता हैं|

- इस सिद्धांत के अनुसार ब्रह्म अपने स्वरूप को किंचिद मात्र भी नहीं बदलता हैं, किन्तु भ्रमवश उसमे भिन्नता प्रतीत होती हैं|
- माया न सत रूप हैं न ही असत रूप हैं और न ही उभयात्मिका हैं| माया सत असत से अनिर्वचनीय, मिथ्यारूप और सनातन हैं|
- माया रूपी मेघ से जगत रूपी पानी बरसता हैं और आकाश के सामान निर्लेप चेतन तत्व की किसी प्रकार की हानि नहीं होती हैं|
- नाम और रूप रहित ये जगत जिसमें ठहरता हैं, उसको कोई प्रकृति कहते हैं, कोई माया कहते हैं तथा कुछ लोग परमाणु कहते हैं| यहाँ वैशेषिक का परमाणु, सांख्य की प्रकृति तथा अद्वैतवादियो की माया एक ही हैं|

THANK U